B.Ed. 2nd Year **Dr. Amod Kumar Sinha**
Session – 2018-2020 (Assistant Professor)
Subject – Pedagogy of History **Department of Education**
Course – 7 (B) /Unit – 2(d) **A.N. D. College**
Topic – इतिहास के पाठ्यक्रम–निर्धारण के सिद्धांत Shahpur Patory
(Principles of Framing Curriculum of History) Samastipur
Lecture No. - 49

माध्यमिक शिक्षा हेतु इतिहास के पाठ्यक्रम का निर्धारण निम्न सिद्धांतो अंतर्गत किया जाता है -

1. **जीवन से संबंध का सिद्धांत** – इतिहास भूतकालीन सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक बातों की जानकारी उपलब्ध कराता है। इन सभी को छात्रों के सम्मुख इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि ये विद्यार्थियों के भावी जीवन में काम आ सकें।

2. **चयन का सिद्धांत** – छात्रों में उदारता, सहिष्णुता एवं सामाजिकता की भावना के विकास एवं आधुनिक समाज के अध्ययन के लिए चयन के सिद्धांत का पाठ्यक्रम-निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान है।

3. **आवश्यकता एवं रूचि का सिद्धांत** – प्राचीन एवं मध्यकालीन शिक्षा अध्यापक केन्द्रित थी। उसमें बालकों की आवश्यकता, रूचि, योग्यता, एवं क्षमता पर ध्यान नहीं दिया जाता था। आधुनिक शिक्षा बाल-केन्द्रित है। अतः पाठ्यक्रम का निर्माण बालकों की रूचि एवं आवश्यकता के अनुसार किया जाना चाहिए।

4. **सामुदायिक जीवन से संबंध का सिद्धांत** – पाठ्यक्रम द्वारा सामाजिक जीवन की आवश्यकताएँ पूरी हो सकें तथा विद्यार्थी में देश-प्रेम, त्याग, सहयोग एवं अच्छी नागरिकता के गुणों का विकास हो सके, इसके लिए आवश्यक है कि पाठ्यक्रम का संबंध सामुदायिक जीवन से बना रहे।

5. **प्रेरणा का सिद्धांत** – छात्र कुछ विषयों या कुछ अध्यापकों की कक्षा में बैठना पसंद नहीं करते न ही गृह कार्य करना। इसपर यदि हम सोचें तो पाते हैं कि मूल कारण प्रेरणा की कमी होना है। पाठ्यक्रम निर्माण में यदि प्रेरणा के सिद्धांत का ध्यान रखा जाए तो इस प्रकार की समस्या का सामना कभी नहीं करना पड़ेगा।

6. **अवकाश समय के सदुपयोग का सिद्धांत** – छात्र अवकाश के समय का सही सदुपयोग कर जीवन को आनंदमय एवं उद्देश्यपूर्ण बना सकें, इसके लिए पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय अवकाश के समय के सदुपयोग के सिद्धांत का ध्यान रखना चाहिए।

7. **लचीलेपन का सिद्धांत** – पाठ्यक्रम को लचीला होना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसमें उचित परिवर्तन किया जा सके।

8. **रचनात्मक कार्यों का सिद्धांत** – इतिहास-पाठ्यक्रम का रचनात्मक होना आवश्यक है अन्यथा यह नीरस हो जात है। इसके लिए छात्र विभिन्न चित्रों, मानचित्रों, समय-रेखा आदि की रचना कर सकते हैं।

9. **एकीकरण एवं समन्वय का सिद्धांत** – इतिहास के पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय ऐतिहासिक घटनाओं का आम विषयों के साथ समन्वय एवं एकीकरण किया जाना आवश्यक है।

10. **शैक्षिक मूल्यांकन का सिद्धांत** – इतिहास के पाठ्यक्रम का मुख्य ध्येय केवल सूचना दना नहीं, वरन् बालकों के चरित्र निर्माण भी है। इसके द्वारा उनमें तर्क-शक्ति, विचार-शक्ति एवं स्मरण-शक्ति का विकास होता है। यदि ऐतिहासिक तथ्यों का विधि पूर्वक चयन किया जाए तो इतिहास सामाजिक शिक्षा का स्थान ग्रहण कर सकता है। इससे बालक को उसके वातावरण के अनुकूल शिक्षा देकर सामाजिक चेतना उत्पन्न की जा सकती है।

समाप्त